UTTARAKHAND OPEN UNIVERSITY, HALDWANI (NAINITAL)

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी (नैनीताल)

HD-05

सत्रीय कार्य

Last Date of Submission:15May2014 जमा करने की अन्तिम तिथि**:** 15 मई 2014

कोर्स शीर्षक: आधुनिक काव्य **कोर्स कोड :**एच0डी0-**0**5

अधिकतम अंक - 40 **Maximum Marks: 4**0

पाठ्यक्रम कोड – **बी ए** 10 **वर्ष** – तृतीय

सत्र– 2013-14 **Year:** 2013-14

भाग - क

भाग 'क' में आठ लघु उत्तरीय प्रश्न दिए गए हैं , इनमें से केवल चार प्रश्नों के उत्तर देने हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए *05* अंक निर्धारित हैं , तथा प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक नही होना चाहिए।

1. निम्न में से किसी एक पद्यांश की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिये.

(क) दुःख ही जीवन की कथा रही \ क्या कहूँ आज, जो नहीं कही
हो इसी कर्म पर वज्रपात \ यदि धर्म रहे नत सदा माथ
इस पथ पर, मेरे कार्य सकल \ हों भ्रष्ट शीत के-से शतदल !
कन्ये, गत कर्मों का अर्पण \ कर, करता में तेरा तर्पण !

(ख) जो कि आत्मदा \ जो बलदा है \ सारा विश्व उपासक जिसका
सारे देव प्रशंसक जिसके \ अमृत-मृत्यु दोनों जिसकी छाया में पलते
उसे हविष्य समर्पित करते।
कस्मै देवाय हविषा विधेम ? \ यही देव है जिसे हमारा \ श्रद्धाविष्य-समर्पित
हो अब \ इसी देव को नमन करो सब \ वाहन करेगा यही तुम्हारे मेरे,
युग का योग-क्षेम।

2 हिन्दी खंडकाव्य पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

3 'परिवर्तन' कविता के अभिव्यंजना-पक्ष की चर्चा कीजिए।

4 कविवर पन्त की काव्यभाषा पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

5 छायावादी शिल्प-सौष्ठव की संक्षेप में विवेचना कीजिए।

6 कवि बच्चन का संक्षिप्त जीवन परिचय लिखिए।

7 कुआनों नदी कविता के अनुभूति पक्ष पर संक्षेप में अपने विचार व्यक्त कीजिये।

8 'प्रवाद पर्व' के अभिव्यक्त मानवीय दृष्टि पर प्रकाश डालिए।

भाग 'ख'

इस भाग में चार दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिए गए हैं , इनमें से केवल दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए दस अंक निर्धारित हैं।

1. आधुनिक हिन्दी काव्य के उद्भव एवं विकास पर विस्तृत निबंध लिखिए।
2. कविवर सुमित्रानंदन पन्त का सम्पूर्ण जीवन एवं साहित्यिक परिचय देते हुए 'परिवर्तन' कविता के अभिव्यंजना पक्ष का समीक्षात्मक विवेचन कीजिए।
3. 'दो चट्टाने' कविता के अनुभूति एवं अभिव्यक्ति पक्ष का सविस्तार विश्लेषण कीजिए।
4. हिन्दी साहित्य के अंतर्गत लंबी कविता एवं खंडकाव्य की परम्परा एवं उनके स्वरूप का विस्तारपूर्वक विवेचन कीजिए।